القرآن الكريم

ایاتہا ۷ (۱) سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ (۵) رکوعہا ۱

इस में ७ आयतें हैं सूरह फातिहा मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ① الرَّحْمٰنِ الجزء ۱

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। जो बड़ा महरबान,

الرَّحِيْمِ ۙ ② مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۭ ③

निहायत रहम वाला है। जो हिसाब के दिन का मालिक है।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۭ ④

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद तलब करते हैं।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ ⑤ صِرَاطَ

तू हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे। उन लोगों

الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ ⑥ غَيْرِ

के रास्ते की जिन पर तू ने इन्आम फरमाया, न

الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّاۗلِّيْنَ ۧ ⑦ ع

उन के रास्ते की जिन पर गज़ब किया गया और न गुमराहों के रास्ते की।

اٰیاتُها ٢٨٦ (٢) سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ (٨٧) رُكُوْعَاتُهَا ٤٠

उस में २८६ आयतें हैं सूरह बक़रह मदीना में नाज़िल हुई और ४० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ۝١ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ

अलिफ लाम मीम। ये ऐसी किताब है के जिस में शक नहीं।

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

जो मुत्तक़ियों को हिदायत देने वाली है। उन मुत्तक़ियों को जो ईमान रखते हैं

بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

गैब पर और नमाज़ क़ाइम करते हैं और उन चीज़ों में से

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣ وَ الَّذِيْنَ

जो हम ने उन को दीं खर्च करते हैं। और जो

يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ

ईमान रखते हैं उस किताब पर जो आप की तरफ उतारी गई और उन किताबों

مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤

पर जो आप से पेहले उतारी गईं। और आखिरत पर भी वो यक़ीन रखते हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥

यही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया उन के लिए बराबर है चाहे आप उन्हें डराएं या

لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन्हें न डराएं, वो ईमान नहीं लाएंगे। अल्लाह ने मुहर लगा दी है उन के दिलों पर

وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز وَّلَهُمْ عَذَابٌ

और उन के कानों पर और उन की आँखों पर परदा है। और उन के लिए भारी

عَظِيْمٌ ۝٧ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ع

अज़ाब है। और बाज़ लोग ऐसे हैं जो केहते हैं के हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर

وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٨ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وقف لازم

और आखिरी दिन पर हालांके वो ईमान नहीं लाए। वो अल्लाह को धोका दे रहे हैं

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩ ؕ

और उन को भी जो ईमान लाए हैं। और वो धोका नहीं देते मगर अपने आप को और उन्हें एहसास भी नहीं।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

उन के दिलों में बीमारी है, फिर अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ा दी। और उन के लिए दर्दनाक

اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ

अज़ाब है इस वजह से के वो झूठ बोलते हैं। और जब उन से कहा जाता है

لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝١١

तुम ज़मीन में फसाद मत फैलाओ, तो केहते हैं के हम तो सिर्फ इस्लाह करने वाले हैं।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝١٢

सुनो! यक़ीनन यही लोग फसाद फैलाने वाले हैं, लेकिन उन्हें एहसास नहीं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ

और जब उन से कहा जाता है के तुम ईमान लाओ ऐसा जैसा के ये लोग (यानी सहाबा) ईमान लाए हैं तो केहते हैं

كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ

के क्या हम ईमान लाएं जैसा के ये बेवकूफ लोग ईमान लाए हैं? सुनो! यक़ीनन यही लोग बेवकूफ हैं, लेकिन

لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ

वो जानते नहीं। और जब वो मिलते हैं ईमान वालों से तो केहते हैं के हम मोमिन हैं।

وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ

और जब वो तनहाई में होते हैं अपने शयातीन के पास, तो केहते हैं के हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ

مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ

मज़ाक़ कर रहे थे। अल्लाह उन के साथ मज़ाक़ करता है और उन्हें ढील देता है के अपनी सरकशी में

يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۠

हैरान फिरें। यही लोग हैं जिन्हों ने गुमराही को खरीदा हिदायत के बदले में।

فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

फिर उन की तिजारत नफाबख्श नहीं हुई और वो हिदायतयाफता नहीं हैं।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ

उन का हाल ऐसा है जैसा उस शख्स का हाल जिस ने आग जलाई। फिर जब आग ने रोशन कर दिया

مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ

उस के अतराफ को तो अल्लाह ने उन के नूर को सल्ब कर लिया और उन को छोड़ दिया तारीकियों में के वो

لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾ ۙ

देख नहीं पाते। वो बेहरे हैं, गूंगे हैं, अन्धे हैं, इस लिए वो (कुफ्र से) रूजअू नहीं करेंगे।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّ بَرْقٌ ۚ

या उन का हाल आसमान से बरसने वाली बारिश की तरह है के जिस में तारीकियाँ हों और गर्ज हो और बिजली हो।

يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ

वो अपनी उंगलियां डाल रहे हैं अपने कानों में गर्ज की वजह से, मौत के

الْمَوْتِ ۭ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ

खौफ से। और अल्लाह काफिरों का इहाता किए हुए हैं। क़रीब है के बिजली

يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ۭ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ

उन की बीनाइयों को उचक ले। जब कभी बिजली उन के लिए रोशनी कर देती है तो उस में चलने लगते हैं।

وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ

और जब उन पर तारीकी छा जाती है तो खड़े रेह जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहता तो सल्ब कर लेता उन के कान

وَ اَبۡصَارِهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۲۰ يٰۤاَيُّهَا ع ٣

और उन की आँखों को। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। ऐ इन्सानो!

النَّاسُ اعۡبُدُوۡا رَبَّكُمُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ وَ الَّذِيۡنَ

इबादत करो अपने उस रब की जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी पैदा किया

مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ ۲۱ الَّذِىۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ

जो तुम से पेहले थे ताके तुम मुत्तक़ी बनो। वो अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को

فِرَاشًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً وَّاَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخۡرَجَ

बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया। और जिस ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस

بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزۡقًا لَّكُمۡ ۚ فَلَا تَجۡعَلُوۡا لِلّٰهِ اَنۡدَادًا

पानी के ज़रिए फलों को निकाला तुम्हारे खाने के लिए। इस लिए तुम अल्लाह के शरीक मत बनाओ

وَّ اَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۲۲ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا

हालाँके तुम जानते हो। और अगर तुम शक में हो उस कुरआन की तरफ से जो हम ने उतारा

عَلٰى عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ وَادۡعُوۡا شُهَدَآءَكُمۡ

अपने बन्दे पर तो तुम उसी जैसी एक सूरत ले आओ। और तुम बुलाओ अपने मददगारों को

مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۲۳ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا

अल्लाह के अलावा अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर तुम ऐसा न कर सको

وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ

और हरगिज़ तुम ऐसा नहीं कर सकोगे, तो तुम डरो उस आग से जिस का ईंधन इन्सान

وَ الۡحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ۲۴ وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

और पथ्थर (बुत) हैं, जो तय्यार की गई है काफिरों के लिए। और आप बशारत सुना दीजिए उन लोगों को जो ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا

और नेक अमल करते रहे, (इस बात की बशारत) के उन के लिए जन्नतें हैं के जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الۡاَنۡهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوۡا مِنۡهَا مِنۡ ثَمَرَةٍ رِّزۡقًا ۙ قَالُوۡا

होंगी। जब कभी वहाँ से कोई फल उन्हें खाने को दिया जाएगा, तो वो कहेंगे के ये तो वही फल है जो

هٰذَا الَّذِىۡ رُزِقۡنَا مِنۡ قَبۡلُ ۙ وَاُتُوۡا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمۡ

हमें खाने को दिया गया इस से पेहले, और उन्हें एक दूसरे के मुशाबेह फल दिए जाएंगे। और उन के लिए

فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٥ اِنَّ اللّٰهَ

उन में पाक साफ बीवियाँ होंगी और वो उन में हमेशा रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह

لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ

हया नहीं करता इस से के वो कोई मिसाल बयान करे किसी मच्छर की हो या उस से भी बढ़ कर।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

फिर अलबत्ता वो लोग जो ईमान लाए, तो वो यकीन रखते हैं के ये हक़ है, उन के रब की तरफ से है।

وقف لازم وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ

और अलबत्ता जो काफिर हैं वो केहते हैं के उस के ज़रिए मिसाल बयान कर के अल्लाह ने किस चीज़ का इरादा किया?

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ

अल्लाह उस के ज़रिए बहोत सों को गुमराह करते हैं और बहोत सों को उस के ज़रिए हिदायत देते हैं। और उस के ज़रिए अल्लाह गुमराह

اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٦ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

नहीं करते मगर नाफरमान लोगों को। उन लोगों को जो अल्लाह का अहद तोड़ते हैं उस के पुखता

مِيْثَاقِهٖ ۠ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ

करने के बाद, और जो तोड़ते हैं उन तअल्लुक़ात को जिन के जोड़े जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है

وَ يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٢٧

और वो ज़मीन में फसाद फैलाते हैं। यही लोग खसारा उठाने वाले हैं।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ

कैसे तुम कुफ्र करते हो अल्लाह के साथ हालांके तुम बेजान थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़िन्दा किया। फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर

ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٢٨ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ

वो तुम्हें ज़िन्दा करेगा, फिर उस की तरफ तुम लौटाए जाओगे। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा कीं

مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ

वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन में हैं। फिर वो आसमान की तरफ मुतवज्जेह हुवा, फिर उस ने उन को

ع ٣ ٩ ٣ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٢٩ ۧ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

सात आसमान बनाया। और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है। और जब के आप के रब ने फरिश्तों से

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ

फरमाया के मैं ज़मीन में खलीफा मुकर्रर करने वाला हूँ। फरिश्तों ने कहा क्या आप ज़मीन में

فِيۡهَا مَنۡ يُّفۡسِدُ فِيۡهَا وَ يَسۡفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ

मुकर्रर करते हैं उस को जो ज़मीन में फसाद फैलाए और खूँरेज़ी करे? हालांके हम तसबीह करते हैं

بِحَمۡدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىۡۤ اَعۡلَمُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾

आप की हम्द के साथ और हम आप की पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने फरमाया मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الۡاَسۡمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمۡ عَلَى الۡمَلٰٓـئِكَةِ ۙ

और अल्लाह ने आदम (अलैहिस्सलाम) को तमाम नाम सिखला दिए, फिर उन को पेश किया फरिश्तों पर।

فَقَالَ اَنۡۢبِـئُوۡنِىۡ بِاَسۡمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۳۱﴾

उस के बाद फरमाया के तुम मुझे खबर दो उन चीज़ों के नामों की अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوۡا سُبۡحٰنَكَ لَا عِلۡمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمۡتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَلِيۡمُ

फरिश्तों ने कहा आप पाक हैं, हमें इल्म नहीं मगर उतना ही जो आप ने हमें सिखलाया। यक़ीनन आप ही इल्म

الۡحَكِيۡمُ ﴿۳۲﴾ قَالَ يٰٓـاٰدَمُ اَنۡۢبِئۡهُمۡ بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۚ فَلَمَّآ اَنۡۢبَاَهُمۡ

वाले, हिकमत वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ आदम! आप उन को बतलाइए उन चीज़ों के नाम। फिर जब आदम (अलैहिस्सलाम)

بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۙ قَالَ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكُمۡ اِنِّىۡۤ اَعۡلَمُ غَيۡبَ السَّمٰوٰتِ

ने उन को उन चीज़ों के नाम बतला दिए, तो अल्लाह ने फरमाया के क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के मैं जानता हूँ

وَالۡاَرۡضِ ۙ وَاَعۡلَمُ مَا تُبۡدُوۡنَ وَ مَا كُنۡتُمۡ تَكۡتُمُوۡنَ ﴿۳۳﴾

आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ें। और मैं जानता हूँ वो जो तुम ज़ाहिर करते हो और वो जो तुम छुपाते हो।

وَ اِذۡ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓـئِكَةِ اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوۡٓا اِلَّآ اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰى

और जब के हम ने फरिश्तों से कहा के तुम सजदा करो आदम को, तो उन तमाम ने सजदा किया सिवाए इबलीस के। के उस ने इन्कार किया

وَاسۡتَكۡبَرَ ٭ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۳۴﴾ وَ قُلۡنَا يٰٓـاٰدَمُ اسۡكُنۡ

और उस ने बड़ा बनना चाहा। और वो काफिरों में से हो गया। और हम ने कहा के ऐ आदम! तुम

اَنۡتَ وَ زَوۡجُكَ الۡجَـنَّةَ وَكُلَا مِنۡهَا رَغَدًا حَيۡثُ شِئۡتُمَا ۖ

और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो। और तुम दोनों जन्नत से खाओ कुशादगी के साथ जहाँ तुम चाहो।

وَلَا تَقۡرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوۡنَا مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۳۵﴾ فَاَزَلَّهُمَا

लेकिन तुम क़रीब मत जाना इस दरख्त के, वरना तुम कुसूरवारों में से बन जाओगे। फिर उन दोनों को शैतान

الشَّيۡطٰنُ عَنۡهَا فَاَخۡرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيۡهِ ۖ وَقُلۡنَا اهۡبِطُوۡا

ने वहाँ से फुसला दिया, फिर उन को निकाल दिया उन नेअमतों में से जिन में वो थे। और हम ने कहा के तुम नीचे उतर जाओ

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ

तुम में से एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में आरज़ी ठिकाना है और फाइदा उठाना है एक वक्त

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ

तक। फिर आदम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से चन्द कलिमात हासिल किए, फिर अल्लाह ने आदम (अलैहिस्सलाम) की तौबा कबूल फरमाई।

اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ

यक़ीनन वो तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम वाला है। हम ने कहा के तुम सब यहाँ से नीचे उतर जाओ।

فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ

फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत के पीछे चलेगा, तो उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। और वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों

ع ٤ بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

को झुठलाया, तो ये लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ

ऐ याकूब (अलैहिस्सलाम) की औलाद! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जो मैं ने तुम पर की

وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾

और तुम मेरा अहद पूरा करो, मैं तुमहारा अहद पूरा करूंगा। और तुम मुझ ही से डरो।

وَ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ

और ईमान लाओ उस पर जिस को मैं ने उतारा, जो सच्चा बतलाने वाला है उस को जो तुम्हारे पास है और तुम उस के

كَافِرٍ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ز وَّاِيَّايَ

सब से पेहले इन्कार करने वाले मत बनो। और तुम मेरी आयतों के बदले में थोड़ी सी क़ीमत मत लो। और तुम मुझ ही

فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوا

से डरो। और हक़ को बातिल के साथ मत मिलाओ और हक़ को मत

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا

छुपाओ इस हाल में के तुम जानते हो। और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात

الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ

दो और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करो। क्या तुम दूसरों को नेकी का

بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ

हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो, इस हाल में के तुम किताब की तिलावत भी करते हो?

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا

क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? और सब्र और नमाज़ से मदद तलब करो। और यक़ीनन ये नमाज़

لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿۴۵﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

भारी चीज़ है मगर उन खुशूअ करने वालों पर, जो यक़ीन रखते हैं

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ يٰبَنِيْۤ ع ۵

के वो अपने रब से मिलने वाले हैं और ये के वो अल्लाह की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ याकूब

اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ اَنِّيْ

(अलैहिस्सलाम) की औलाद! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जो मैं ने तुम पर की और ये के

فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ

मैं ने तुम को फज़ीलत दी (तमाम जहान वालों) पर। और डरो उस दिन से जिस दिन कोई शख्स

عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ

किसी शख्स के कुछ भी काम नहीं आएगा और किसी की तरफ से सिफ़ारिश कबूल नहीं की जाएगी और किसी की तरफ

مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ

से फिदया नहीं लिया जाएगा और न उन की नुसरत की जाएगी। और जब हम ने तुम्हें नजात दी

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ

आले फिरऔन से जो तुम्हें बदतरीन सज़ा के ज़रिए तकलीफ देते थे, वो ज़बह करते थे

اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

तुम्हारे बेटों को और ज़िन्दा छोड़ते थे तुम्हारी औरतों को। और उस में तुम्हारे रब की तरफ से

مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ

भारी इम्तिहान था। और जब हम ने तुमहारे लिए समन्दर को फाड़ा, फिर हम ने तुम्हें नजात दी

وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا

और आले फिरऔन को ग़र्क किया और तुम देख भी रहे थे। और जब हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से

مُوْسٰۤى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ

चालीस रात का वादा किया, फिर तुम ने उन के जाने के बाद बछड़े को माबूद बनाया

وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
इस हाल में के तुम जुल्म कर रहे थे। फिर हम ने तुम से मुआफ किया इस के बाद

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
ताके तुम शुक्र अदा करो। और जब के हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى
और हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली किताब दी ताके तुम हिदायतयाफता बनो। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम)

لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ
ने अपनी क़ौम से फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन तुम ने अपनी जानों पर जुल्म किया है तुम्हारे बछड़े को माबूद

الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ
बनाने की वजह से तो तुम तौबा करो अपने पैदा करने वाले की तरफ, फिर बाज़ आदमी बाज़ को क़त्ल करो। ये तुम्हारे

خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ
लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, फिर उस ने तुमहारी तौबा कबूल की। यक़ीनन वो तौबा कबूल करने

الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى
वाला, निहायत रहम वाला है। और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम हरगिज़ आप पर ईमान नहीं लाएंगे जब तक के हम अल्लाह को

اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾
आमने सामने न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की एक ज़ोरदार आवाज़ ने पकड़ लिया इस हाल में के तुम (आँखों से) देख

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾
रहे थे। फिर हम ने तुम्हें (ज़िन्दा कर के) उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो।

وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ
और हम ने तुम पर बादलों का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सल्वा उतारा। के तुम

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
खाओ उन पाकीज़ा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं। और उन्हों ने हम पर जुल्म नहीं किया लेकिन

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
वो अपनी जानों पर जुल्म करते थे। और जब हम ने कहा के तुम दाखिल हो जाओ इस बसती में,

فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
फिर उस में से खाओ जहाँ तुम चाहो कुशादगी के साथ और तुम दरवाज़े से दाखिल हो जाओ सजदा करते हुए

وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾

और तुम यूँ कहो तौबा (तौबा), तो हम तुम्हारे लिए तुम्हारी खताएं बख्श देंगे। और हम नेकी करने वालों को मज़ीद देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا

फिर उन ज़ालिमों ने बदल दिया बात को उस के अलावा से जो उन से कही गई थी, फिर हम ने

عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

उन ज़ालिमों पर उतारा आसमान से अज़ाब इस वजह से के वो

يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ ع

नाफरमान थे। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पानी तलब किया अपनी क़ौम के लिए तो हम ने कहा

بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ

अपना असा पथ्थर पर मारिए। फिर उस से बारा चश्मे फूट पड़े।

قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا

तमाम लोगों ने अपने पीने की जगह मालूम कर ली। खाओ और पियो

مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ

अल्लाह की रोज़ी में से और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो। और जब तुम ने कहा

يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ

ऐ मूसा! हम हरगिज़ सब्र नहीं करेंगे एक खाने पर, इस लिए आप हमारे लिए दुआ कीजिए अपने रब से

يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَ قِثَّآئِهَا

के वो हमारे लिए निकाले उन चीज़ों में से जिसे ज़मीन उगाती है यानी उस की सबज़ी और ककड़ी

وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ بَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ

और लहसन और मसूर और प्याज़। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम बदले में मांगते हो

الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا

उस चीज़ को जो अदना है उस के बदले में जो उस से बेहतर है? तुम शेहर में उतर जाओ

فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَ الْمَسْكَنَةُ ۗ

तो यक़ीनन तुम्हारे लिए वो चीज़ें होंगी जिन का तुम ने सवाल किया। और उन के ऊपर ज़िल्लत और फक़्र मार दिया गया,

وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ

और वो अल्लाह का गज़ब ले कर लौटे। ये इस वजह से के वो अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ
आयात का इन्कार करते थे और अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करते थे। ये
ع ٧ ٢ ٧ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
इस वजह से के उन्हों ने नाफरमानी की और वो हद से आगे बढ़ते थे। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए
وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
और जो यहूदी हैं और नसारा हैं और साबी हैं, जो भी ईमान लाएंगे अल्लाह पर
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
और आखिरी दिन पर और नेक काम करते रहेंगे तो उन के लिए उन का अज्र होगा उन के
رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾
रब के पास। और न उन पर खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا
और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर को उठाया। (कहा के) पकड़ो
مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾
मज़बूती से उस तौरात को जो हम ने तुम्हें दी और याद करो उस को जो उस में है ताके तुम मुत्तक़ी बनो।
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
फिर तुम ने उस के बाद ऐराज़ किया। फिर अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की महरबानी
وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
तुम पर न होती तो तुम नुक़सान उठाने वालों में से बन जाते। यक़ीनन तुम्हें मालूम हैं वो लोग
الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا
जिन्हों ने तुम में से ज़्यादती की सनीचर के बारे में, फिर हम ने उन से कहा के तुम ज़लील
قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا
बन्दर बन जाओ। फिर हम ने उन्हें उन के आगे वालों के लिए और उन से पीछे वालों के लिए इबरत बनाया
وَمَا خَلْفَهَا وَ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत बनाया। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया
لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا
अपनी क़ौम से अल्लाह तुम्हें हुक्म देते हैं के तुम कोई गाय ज़बह करो। तो उन्हों ने कहा के

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ أَعُوذُ بِاللّٰهِ أَنْ أَكُونَ
क्या आप हम से मज़ाक़ करते हैं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अल्लाह की पनाह इस से के मैं जाहिलों में

مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ
से हो जाऊँ। यहूदियों ने कहा के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए साफ बयान करे के वो

إِنَّهٗ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ
गाय क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं के वो गाय ऐसी है जो न बहोत बूढ़ी हो और न बिल्कुल

بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
जवान हो, उस के दरमियान में अधेड़ उम्र वाली हो। और तुम कर गुज़रो जिस का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है। उन्हों ने कहा

رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ إِنَّهٗ يَقُولُ إِنَّهَا
के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए साफ बयान करे के उस का रंग कैसा हो। मूसा

بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا
(अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं वो गाय पीली हो, उस का रंग खुला हुवा हो, जो देखने वालों को मसरूर करती हो।

ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ إِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ
उन्हों ने कहा के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए बयान करे के वो गाय क्या है? इस लिए के

وَإِنَّآ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ إِنَّهٗ يَقُولُ إِنَّهَا
गाय हम पर मुश्तबह हो गई। और यक़ीनन अगर अल्लाह ने चाहा हम राह पा लेंगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं

بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ
के वो गाय ऐसी हो जो खेती के लिए जोती न गई हो जो ज़मीन को फाड़े, और न खेती को सैराब करती हो।

مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ
और सहीह सालिम हो, उस में कोई धब्बा न हो। उन्हों ने कहा अब आप हक़ बात ले आए।

فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا ع ٨
फिर उन्हों ने उस को ज़बह किया और वो उस के क़रीब भी नहीं थे। और जब तुम ने एक शख्स को क़त्ल किया,

فَادّٰرَءْتُمْ فِيهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾
फिर तुम ने उस के बारे में झगड़ा किया। और अल्लाह निकालने वाला था उस को जो तुम छुपा रहे थे।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ
फिर हम ने कहा के तुम गाय के किसी टुकड़े को मक़तूल पर मारो। इसी तरह अल्लाह मुरदों को भी ज़िन्दा करेंगे।

وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ
और अल्लाह तुम्हें अपनी आयतें दिखाते हैं ताके तुम अक़्ल वाले बन जाओ। फिर तुम्हारे दिल
قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ
उस के बाद सख्त हो गए, फिर वो पत्थर की तरह हो गए या उस से भी ज़्यादा
قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ
सख्त। और यक़ीनन पथ्थरों में से तो कुछ ऐसे होते हैं के अलबत्ता उन से नेहरें फूटती हैं।
وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا
और उन में से कुछ फट जाते हैं जिन से पानी निकलता है। और उन में से कुछ
لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
अल्लाह के खौफ से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَ قَدْ كَانَ
कामों से जो तुम करते हो। क्या फिर तुम इस की उम्मीद रखते हो के ये (यहूदी) तुमहारे केहने से ईमान ले आएंगे
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ
हालांके उन में से एक जमाअत अल्लाह के कलाम को सुनती है, फिर उस में तहरीफ करती है
مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ
इस के बाद के वो उस को समझती है, हालांके वो इल्म भी रखती है। और जब वो ईमान वालों से मिलते हैं
اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا
तो केहते हैं के 'हम मोमिन हैं'। और जब उन में से एक दूसरे के साथ तन्हाई में होते हैं तो केहते हैं के
اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ
क्या तुम उन मुसलमानों से बयान कर देते हो वो जो अल्लाह ने तुम पर खोला है ताके वो तुम से उस के ज़रिए हुज्जतबाज़ी
بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ
करें तुम्हारे रब के पास? क्या तुम्हें अक़्ल नहीं? क्या वो ये नहीं जानते के
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَ مِنْهُمْ
अल्लाह जानता है उस को भी जिस को वो छुपाते हैं और जिस को वो ज़ाहिर करते हैं। और उन में से बाज़
اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا
अनपढ़ हैं जो किताब को नहीं जानते सिवाए तमन्नाओं के। और वो सिर्फ

النصف

يَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ق

गुमान करते हैं। फिर हलाकत है उन लोगों के लिए जो किताब को अपने हाथों से लिखते हैं,

ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا

फिर केहते हैं के ये अल्लाह की तरफ से है ताके उस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत

قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ

ले लें। फिर हलाकत है उन के लिए उस से जो उन के हाथों ने लिखा है और हलाकत है उन के लिए

مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ

उस माल से जो वो कमा रहे हैं। और उन्हों ने कहा के आग हमें हरगिज़ नहीं छुएगी मगर चन्द गिने चुने दिन।

قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ

आप फरमा दीजिए क्या तुम ने अल्लाह के पास कोई अहद ले रखा है के फिर अल्लाह हरगिज़ अपने अहद के खिलाफ नहीं करेगा

اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۰﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ

या तुम अल्लाह पर केहते हो वो जो तुम जानते नहीं हो? क्यूं नहीं! जो भी बुरा काम

سَيِّئَةً وَّ اَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

करेगा और उस को उस की खताओं ने घेर लिया तो यही लोग दोज़खी हैं।

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वो उस में हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع وَاِذْ اَخَذْنَا ع ۹

तो ये लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। और जब के हम ने बनी इस्राईल

مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ قف وَ بِالْوَالِدَيْنِ

से पुख्ता अहद लिया के तुम इबादत न करो मगर अल्लाह की। और वालिदैन के साथ

اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا

हुस्ने सुलूक करो और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों के साथ और लोगों

لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ

से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۸۳﴾

फिर तुम ने रूगरदानी की मगर तुम में से थोड़े लोगों ने इस हाल में के तुम मुँह फेर रहे थे।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ

और जब के हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया के तुम आपस में खून मत बहाओ और एक दूसरे को

اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

अपने घरों से मत निकालो। फिर तुम ने इक़रार किया इस हाल में के तुम गवाही देते हो।

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ تُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا

फिर तुम वो लोग हो के तुम एक दूसरे को क़त्ल करते थे और तुम अपने में से एक जमाअत को

مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ

निकालते थे उन के घरों से। तुम उन के खिलाफ गुनाह और जुल्म में

وَالْعُدْوَانِ ط وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ

मदद करते थे। और अगर वो तुमहारे पास कैदी बन कर आएं तो तुम उन का फिदया देते थे इस हाल में के

مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ط اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ

तुम पर उन का निकालना हराम था। क्या फिर तुम तौरात के बाज़ हिस्से पर ईमान रखते हो, और बाज़ के

وَ تَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ج فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ

साथ कुफ्र करते हो? फिर उस शख्स की सज़ा क्या होगी जो तुम में से उस को करे

مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ

सिवाए दुन्यवी ज़िन्दगी में रुसवाई के? और क़ियामत के दिन

يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

उन को सख्ततरीन अज़ाब की तरफ लौटाया जाएगा। और अल्लाह बेखबर नहीं है

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ

उन कामों से जो तुम करते हो। यही लोग हैं जिन्हों ने दुन्यवी ज़िन्दगी को आखिरत के

الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ

मुक़ाबले में खरीदा। फिर उन का अज़ाब हलका नहीं किया जाएगा

ع ١٠ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ

और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَ قَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ

और उन के बाद लगातार रसूल भेजे। और हम ने ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

مَرۡيَمَ الۡبَيِّنٰتِ وَ اَيَّدۡنٰهُ بِرُوۡحِ الۡقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا

को रोशन मोअजिज़ात दिए और हम ने उन की ताईद की रूहुल कुदुस के ज़रिए। क्या फिर जब कभी

جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌۢ بِمَا لَا تَهۡوٰٓى اَنۡفُسُكُمُ اسۡتَكۡبَرۡتُمۡ ۚ

तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आया ऐसी चीजें ले कर जिन को तुम्हारे नफ्स चाहते नहीं थे तो तुम ने बड़ा बनना चाहा।

فَفَرِيۡقًا كَذَّبۡتُمۡ ز وَ فَرِيۡقًا تَقۡتُلُوۡنَ ﴿٨٧﴾ وَ قَالُوۡا

फिर एक जमाअत को तुम ने झुठलाया और एक जमाअत को तुम क़त्ल करते थे। और उन्हों ने कहा के

قُلُوۡبُنَا غُلۡفٌ ؕ بَلۡ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفۡرِهِمۡ فَقَلِيۡلًا

हमारे दिल बन्द हैं। बल्के अल्लाह ने उन पर लानत फरमाई उन के कुफ्र की वजह से, फिर बहोत कम

مَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٨٨﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمۡ كِتٰبٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ

ये ईमान लाएंगे। और जब उन के पास किताब आई अल्लाह की तरफ से जो

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمۡ ۙ وَكَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ يَسۡتَفۡتِحُوۡنَ

सच्चा बतलाने वाली है उस को जो उन के पास है, और वो उस से पेहले काफिरों के खिलाफ फत्ह

عَلَى الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ۖۚ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ مَّا عَرَفُوۡا كَفَرُوۡا بِهٖ ز

तलब करते थे। फिर जब उन के पास आ गया वो जिस को वो पेहचानते भी थे तो उन्हों ने उस के साथ कुफ्र किया।

فَلَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٨٩﴾ بِئۡسَمَا اشۡتَرَوۡا بِهٖٓ

फिर अल्लाह की लानत है काफिरों पर। बुरा है जिस के बदले में उन्हों ने

اَنۡفُسَهُمۡ اَنۡ يَّكۡفُرُوۡا بِمَآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ بَغۡيًا اَنۡ يُّنَزِّلَ

अपनी जानों को बेचा, ये के वो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस को अल्लाह ने उतारा हसद की वजह से, इस

اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوۡ

वजह से के अल्लाह उतारते हैं अपना फ़ज़्ल जिस पर चाहते हैं अपने बन्दों में से। फिर वो

بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿٩٠﴾

ग़ज़ब पर ग़ज़ब को ले कर लौटे। और काफिरों के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब है।

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ اٰمِنُوۡا بِمَآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ قَالُوۡا نُؤۡمِنُ

और जब उन से कहा जाता है के ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने उतारा है तो वो केहते हैं के हम ईमान लाएंगे

بِمَآ اُنۡزِلَ عَلَيۡنَا وَيَكۡفُرُوۡنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الۡحَقُّ

उस पर जो हम पर उतारा गया है और वो उस के अलावा के साथ कुफ्र करते हैं। हालांके वो हक़ है

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ

सच्चा बतलाने वाला है उस को जो उन के पास है। आप फरमा दीजिए तुम क्यूं क़त्ल करते थे अल्लाह के नबियों को

مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۹۱﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى

इस से पेहले अगर तुम मोमिन हो। और यक़ीनन तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम)

بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर तुम ने बछड़े को माबूद बनाया उन के बाद इस हाल में के तुम

ظٰلِمُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

जुल्म कर रहे थे। और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर को

الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا

उठाया। (कहा) के मज़बूती से पकड़ो उस को जो हम ने तुम्हें दिया और गौर से सुनो। उन्हों ने कहा के हम ने

سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا ۗ وَ اُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ

सुना, लेकिन हम नाफरमानी करते हैं। और उन के दिलों में बछड़े की महब्बत पिला दी गई उन के कुफ्र की वजह से।

قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۹۳﴾

आप फरमा दीजिए बुरा है वो जिस का तुम्हारा ईमान तुम्हें हुक्म दे रहा है अगर तुम मोमिन हो।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً

आप फरमा दीजिए के अगर सिर्फ तुम्हारे लिए है आखिरत वाला घर अल्लाह के पास,

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۹۴﴾

और इन्सानों को छोड़ कर, तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

और वो हरगिज़ मौत की तमन्ना नहीं करेंगे कभी भी उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं। और अल्लाह

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۹۵﴾ وَ لَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ

इन ज़ालिमों को खूब जानते हैं। और ज़रूर आप उन्हें तमाम इन्सानों से ज़्यादा हरीस पाएंगे

عَلٰى حَيٰوةٍ ۚۛ وَ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ

ज़िन्दा रेहने पर और मुशरिकीन से भी। उन में से एक एक शख्स तमन्ना करता है के काश उसे एक हज़ार साल

اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ

की ज़िन्दगी दी जाए, हालांके एक हज़ार साल की ज़िन्दगी दिया जाना उसे अज़ाब से बचाने वाला

معانقة ٢ عند المتأخرين

يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ ١١ ع ١١ ١١

नहीं है। और उन के आमाल को अल्लाह देख रहा है। आप फरमा दीजिए के जो

عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ

जिबरील का दुशमन है तो यक़ीनन जिबरील ने इस कुरआन को आप के क़ल्ब पर उतारा है अल्लाह के हुक्म से,

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾

जो सच्चा बतलाने वाला है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं, और हिदायत और बशारत है ईमान वालों के लिए।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ جِبْرِيْلَ

जो अल्लाह का और उस के फरिश्तों और उस के पैगम्बरों का और जिबरील

وَ مِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدْ

और मीकाईल का दुशमन है तो यक़ीनन अल्लाह भी दुशमन है काफिरों का। यक़ीनन

اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ

हम ने आप की तरफ रोशन आयतें उतारीं। और इन आयतों के साथ कुफ्र नहीं करते

اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ

मगर नाफरमान लोग। क्या फिर जब कभी उन्हों ने कोई अहद किया तो उन में से एक जमाअत ने उस को

مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ

फेंक (नहीं) दिया? बल्के उन में से अकसर ईमान ही नहीं लाते। और जब उन के पास रसूल

رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ

आया अल्लाह की तरफ से जो सच्चा बतलाने वाला है उस को जो उन के पास है, तो

فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ

एहले किताब की एक जमाअत ने फैंक दिया अल्लाह की किताब को अपनी पीठ

ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ ز وَ اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا

पीछे गोया के वो जानते ही नहीं। और वो पीछे पड़े उन चीज़ों के जिन की शयातीन तिलावत

الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ

करते थे सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के दौरे हुकूमत में। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कुफ्र नहीं किया

وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ

लेकिन शयातीन कुफ्र करते थे के वो इन्सानों को जादू सिखाते थे। और वो चीज़

اُنۡزِلَ عَلَى الۡمَلَكَيۡنِ بِبَابِلَ هَارُوۡتَ وَ مَارُوۡتَ ؕ
सिखाते थे जो दो फरिश्तों पर उतारी गई बाबुल में, हारूत और मारूत पर।
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنۡ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوۡلَاۤ اِنَّمَا نَحۡنُ فِتۡنَةٌ
और वो किसी को सिखलाते नहीं थे जब तक के ये नहीं केहते थे के हम तो सिर्फ आज़माइश हैं,
فَلَا تَكۡفُرۡ ؕ فَيَتَعَلَّمُوۡنَ مِنۡهُمَا مَا يُفَرِّقُوۡنَ بِهٖ بَيۡنَ
इस लिए तू काफिर मत बन। फिर भी वो उन दोनों फरिश्तों से सीखते थे वो जादू जिस के ज़रिए वो जुदाई
الۡمَرۡءِ وَزَوۡجِهٖ ؕ وَمَا هُمۡ بِضَآرِّيۡنَ بِهٖ مِنۡ اَحَدٍ
डालते थे शौहर और बीवी के दरमियान। और वो उस के ज़रिए किसी को ज़रर नहीं पहोंचा सकते
اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَ يَتَعَلَّمُوۡنَ مَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنۡفَعُهُمۡ ؕ
मगर अल्लाह के हुक्म से। और वो सीखते थे वो जादू जो उन को नुक़सान देता था आैर उन को नफा नहीं देता था।
وَلَقَدۡ عَلِمُوۡا لَمَنِ اشۡتَرٰٮهُ مَا لَهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ
और यक़ीनन उन्हें मालूम है के अलबत्ता वो आदमी जिस ने उस को खरीदा उस के लिए आखिरत में
مِنۡ خَلَاقٍ ۛ وَلَبِئۡسَ مَا شَرَوۡا بِهٖۤ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ لَوۡ كَانُوۡا
कोई हिस्सा नहीं। और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले में उन्हों ने अपनी जानों को बेचा। काश के वो
يَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوۡ اَنَّهُمۡ اٰمَنُوۡا وَ اتَّقَوۡا لَمَثُوۡبَةٌ
जानते। और अगर वो ईमान लाते और मुत्तक़ी बनते तो अल्लाह के पास से
مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ خَيۡرٌ ؕ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٠٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ
जो सवाब है वो बेहतर होता। काश के वो जानते। ऐ ईमान वालो!
اٰمَنُوۡا لَا تَقُوۡلُوۡا رَاعِنَا وَقُوۡلُوۡا انۡظُرۡنَا وَاسۡمَعُوۡا ؕ
तुम 'رَاعِنَا' मत कहो बल्के 'اُنۡظُرۡنَا' कहो और ग़ौर से सुनो।
وَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿١٠٤﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِيۡنَ
और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। एहले किताब में से जो
كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَلَا الۡمُشۡرِكِيۡنَ اَنۡ يُّنَزَّلَ
काफिर हैं वो, और मुशरिकीन ये नहीं चाहते के तुम पर कोई खैर
عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ خَيۡرٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَخۡتَصُّ بِرَحۡمَتِهٖ
उतारी जाए तुम्हारे रब की तरफ से। और अल्लाह अपनी रहमत के साथ खास करता है

ع ١٢

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٥﴾ مَا نَنْسَخْ

जिसे चाहता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। हम जो आयत मन्सूख

مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ

करते या हम उस को भुला देते हैं तो हम उस से बेहतर या उसी जैसी ले आते हैं।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ

क्या आप को मालूम नहीं के अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। क्या आप को मालूम नहीं के

اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ

अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है। और तुम्हारे लिए

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ

अल्लाह के अलावा कोई मददगार और हिमायती नहीं। क्या तुम ये चाहते हो के

اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ

तुम अपने रसूल से सवाल करो जिस तरह से मूसा (अलैहिस्सलाम) से इस से पेहले सवाल किया गया। और जो

يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾

कुफ्र को ईमान के बदले में लेगा तो यक़ीनन वो सीधे रास्ते से भटक गया।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

एहले किताब में से बहोत से चाहते हैं के काश के वो तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के

اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बाद काफिर बना दें अपनी तरफ के हसद से इस के बाद के

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ

उन के लिए हक़ वाज़ेह हो गया। इस लिए तुम मुआफ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक के अल्लाह अपना हुक्म

بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ الثلثة

ले आए। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। और नमाज़ क़ाइम करो

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ

और ज़कात दो। और जो भलाई तुम अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे तो उसे

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوْا

अल्लाह के पास पाओगे। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। और ये केहते हैं के

لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ
हरगिज़ जन्नत में दाखिल नहीं होंगे मगर वही जो यहूदी हैं या नसरानी हैं।

تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
ये उन की झूठी तमन्नाएं हैं। आप फरमा दीजिए तुम अपनी दलील लाओ अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ
सच्चे हो। क्यूं नहीं! जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ किया इस हाल में के वो

مُحْسِنٌ فَلَهٗٓ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
नेकी करने वाला है, तो उस के लिए अपने रब के पास उस का अज्र है। और उन पर न खौफ होगा

ع ١٣ ١٣ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى
और न वो ग़मगीन होंगे। और यहूद ने कहा के नसारा किसी चीज़

عَلٰى شَيْءٍ ۪ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ
पर नहीं। और नसारा ने कहा के यहूद किसी चीज़ पर नहीं।

وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
हालांके वो किताब की तिलावत करते हैं। इसी तरह उन्ही जैसा क़ौल उन्हों ने भी कहा जो कुछ

مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
जानते नहीं। फिर अल्लाह उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ
उस में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं। और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों से

اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ
रोके, (इस से रोके) के उन में अल्लाह का नाम लिया जाए और उन को वीरान करने की कोशिश करे। ये लोग

مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ
हैं के उन के लाइक़ नहीं है के वो उन में दाखिल हों मगर डरते डरते। उन के लिए

فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾
दुन्या में रूस्वाई होगी और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब होगा।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ
और अल्लाह की मिल्क है मशिरक़ भी और मग़रिब भी। तो जिधर तुम मुंह फेरोगे तो उधर अल्लाह का

اللهِ ؕ اِنَّ اللهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ

चेहरा है। यक़ीनन अल्लाह वुसअत वाले, इल्म वाले हैं। और उन्हों ने कहा के अल्लाह

اللهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

औलाद रखता है। अल्लाह औलाद से पाक है, बल्के अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों

وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ

और ज़मीन में हैं। सब उस के सामने आजिज़ी करने वाले हैं। वो आसमानों और ज़मीन को बग़ैर नमूने

وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ

के पैदा करने वाला है। और जब वो किसी चीज़ का फैसला करता है तो उस से केहता है के हो जा,

فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا

तो वो हो जाती है। और उन लोगों ने कहा जो जानते नहीं के अल्लाह हम से कलाम क्यूं नहीं करता

اللهُ اَوْ تَاْتِيْنَاۤ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

या हमारे पास कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं आता? इस तरह उन्ही जैसा क़ौल उन लोगों ने भी कहा जो उन से

مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ

पेहले थे। उन के दिल एक दूसरे के मुशाबेह हैं। यक़ीनन हम ने आयात को साफ साफ बयान किया

لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا

ऐसी क़ौम के लिए जो यक़ीन रखती है। यक़ीनन हम ने आप को हक़ दे कर भेजा बशारत देने वाला

وَّ نَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

और डराने वाला बना कर के। और आप से दोज़खियों के मुतअल्लिक़ सवाल नहीं किया जाएगा।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ

और यहूद व नसारा हरगिज़ आप से राज़ी नहीं होंगे यहाँ तक के आप उन के मज़हब की

مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ

पैरवी कर लें। आप फरमा दीजिए के यक़ीनन अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है।

وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

और अगर आप उन की ख्वाहिशात के पीछे चलेंगे इस के बाद के आप के पास इल्म आ गया

مَا لَكَ مِنَ اللهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ اَلَّذِيْنَ وقف منزل

तो आप के लिए अल्लाह से कोई (बचाने वाला) मददगार और हिमायती नहीं होगा। वो लोग

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

जिन को हम ने किताब दी वो उस की तिलावत करते हैं जैसा के उस की तिलावत का हक़ है। ये

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

उस पर ईमान रखते हैं। और जो उस का इन्कार करेगा तो वही

الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ

खसारा उठाने वाले हैं। ऐ बनी इस्राईल! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जिस का

اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

मैं ने तुम पर इन्आम किया और ये के मैं ने तुम्हें तमाम जहानों (जहान वालों) पर फज़ीलत दी।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا

और डरो उस दिन से जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स के कुछ भी काम नहीं आएगा

وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ

और किसी की तरफ से फिदया कबूल नहीं किया जाएगा और उस को सिफारिश नफा नहीं देगी और उन की

يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ

नुसरत नहीं की जाएगी। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इम्तिहान लिया उन के रब ने चन्द कलिमात के ज़रिए तो इब्राहीम

فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ

(अलैहिस्सलाम) ने उन को पूरे तौर पर अदा किया। अल्लाह ने फरमाया के मैं तुम्हें इन्सानों का पेशवा बनाने वाला हूँ। इब्राहीम

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا

(अलैहिस्सलाम) ने कहा के और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने फरमाया के मेरा अहद ज़ालिमों को नहीं पहोंचेगा। और जब के हम ने

الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا

बैतुल्लाह को बनाया इन्सानों के बार बार आने की जगह और अमन की जगह। और (हम ने हुक्म दिया के) तुम

مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ

मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बनाओ। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और

وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ

इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को ताकीदी हुक्म दिया के तवाफ करने वालों और ऐतेकाफ करने वालों और रूकूअ सजदा

وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ

करने वालों के लिए मेरे घर को पाक करो। और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे

هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ

रब! उस को अमन वाला शेहर बनाइए और यहाँ वालों को फलों की रोज़ी दीजिए, उन को

اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ

जो उन में से ईमान रखते हों अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। अल्लाह ने फरमाया के और जो कुफ्र करेगा

فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ

तो मैं उसे थोड़ा नफा पहोंचाऊँगा, फिर उस को खींच कर आग के अज़ाब की तरफ ले जाऊँगा।

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾ وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ

और वो बुरी जगह है। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बैतुल्लाह की बुन्यादों को ऊपर उठा रहे थे

مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ

और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी, (तो दुआ कर रहे थे के) ऐ हमारे रब! तू हमारी तरफ से कबूल फरमा। यक़ीनन तू

اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ

सुनने वाला, इल्म वाला है। ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी ताबेदारी करने वाला बना

لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا

और हमारी औलाद में से भी अपनी ताबेदार उम्मत बना। और हम को हमारे हज के अहकाम सिखला

وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ

और हमारी तौबा क़बूल फरमा। यक़ीनन तू तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब! और तू

فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ

उन में उन्ही में से एक रसूल भेज जो उन पर तेरी आयतें तिलावत करे, और उन्हें किताब

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

व हिकमत की तालीम दे, और उन को पाक करे। यक़ीनन तू ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ ع ١٥/٨ ١٥

हिकमत वाला है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत से ऐराज़ नहीं करता

اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ

मगर वो जिस ने अपने आप को बेवकूफ बनाया। और यक़ीनन हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को दुन्या में मुन्तखब किया था।

وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ

और यक़ीनन वो आखिरत में नेक लोगों में से होंगे। जब के उन से उन के

رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَ وَصّٰى
रब ने फरमाया के ताबेदार बन जाओ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मैं रब्बुल आलमीन का ताबेदार बन गया। और इसी की

بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى
इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने वसीय्यत की अपने बेटों को और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने भी। (फरमाया) ऐ मेरे बेटो! यक़ीनन

لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ؕ
अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस दीन को मुन्तखब कर लिया है, अब तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में के तुम मुसलमान हो।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ
क्या तुम मौजूद थे जब याकूब (अलैहिस्सलाम) क़रीबुल मौत हुए? जब के आप ने अपने बेटों से फरमाया

لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ
के मेरे बाद तुम किस चीज़ की इबादत करोगे? तो उन्हों ने कहा के हम इबादत करेंगे आप के माबूद की

وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ
और आप के बाप दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ (अलैहिमुस्सलाम) के माबूद की, एक ही माबूद की।

وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا
और हम उसी की ताबेदारी करने वाले हैं। ये उम्मत गुज़र गई। उस के लिए

مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا
वो है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए वो है जो तुम ने कमाया। और तुम से सवाल नहीं किया जाएगा उन कामों

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ
के मुतअल्लिक़ जो वो करते थे। और उन्हों ने कहा के तुम यहूदी या नसरानी बन जाओ, तो तुम हिदायतयाफ्ता केहलाओगे।

قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ
आप फरमा दीजिए बल्के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत (का इत्तिबा कर लो) जो सिर्फ एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا
और मुशरिकीन में से नहीं थे। कहो के हम ईमान लाए अल्लाह पर और उन किताबों पर जो हमारी तरफ उतारी

وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ
गईं और उन किताबों पर जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम)

وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى وَمَآ اُوْتِىَ
और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों पर उतारी गईं और उन किताबों पर जो मूसा और ईसा (अलैहिमस्सलाम) को दी गईं और उन

النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ

किताबों पर जो दूसरे अम्बिया को दी गईं उन के रब की तरफ से। हम उन में से किसी के दरमियान तफरीक़ नहीं करते।

وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

और हम अल्लाह के ताबेदार हैं। फिर अगर ये कुफ्फार ईमान ले आएं उस के मानिन्द जैसा के तुम सहाबा ईमान लाए हो

فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ

तब ये कुफ्फार हिदायतयाफ्ता केहलाएंगे। और अगर वो ऐराज़ करें तो वो सिर्फ (आप की) मुखालफत में हैं।

فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾ صِبْغَةَ

फिर अनक़रीब अल्लाह तुम्हारी तरफ से उन के लिए काफी हो जाएगा। और वो सुनने वाला, इल्म वाला है। (हम ने) अल्लाह

اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّ نَحْنُ لَهٗ

का रंग (इखतियार कर लिया है)। और अल्लाह से बेहतर किस का रंग हो सकता है? और हम उसी की इबादत करने

عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَ هُوَ رَبُّنَا

वाले हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम हम से हुज्जतबाज़ी करते हो अल्लाह के बारे में हालांके वो हमारा और

وَ رَبُّكُمْ ۚ وَلَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَ نَحْنُ لَهٗ

तुम्हारा रब है। और हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम उसी के

مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ

लिए इख्लास करने वाले हैं। क्या तुम यूँ केहते हो के इब्राहीम और इस्माईल और

وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا

इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटे वो यहूदी या

اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

नसरानी थे? आप फरमा दीजिए क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह ज़्यादा जानते हैं? और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा

كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

जो वो गवाही छुपाए जो अल्लाह की तरफ से उस के पास है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेखबर

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ

नहीं है। ये उम्मत गुज़र चुकी। उस के लिए वो अमल हैं जो उस ने कमाए और तुम्हारे लिए

مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾ ع

वो अमल हैं जो तुम ने कमाए। और तुम से सवाल नहीं किया जाएगा उन आमाल के मुतअल्लिक़ जो वो करते थे।